कविता और कविता की सम्भावना

खगेन्द्र ठाकुर

आज की कविता, समकालीन कविता की चारित्रिक विशेषता बताना मुश्किल है। इसका मतलब यह भी हो सकता है कि उसकी चारित्रिक विशेषता को समझना ही मुश्किल है। इसका क्या कारण है? क्या यह कि कविता में विविधता है? विविधता तो हर युग की कविता में रही है। एक कवि में भी विविधता होती है। विविधता होना अच्छी बात है और स्वाभाविक भी, क्योंकि जीवन ही विविधतापूण ्र है, यथार्थ का स्वरूप विविधतापूर्ण है। विविधता के बावजूद हर काव्ययुग में समय की एक पहचान दिखायी पड़ती रही है। आज के ताजा कवि समय की पहचान पकड़ने के लिए या यह कहें कि समय को पहचानने और अपनी कविताओं में समय का चरित्र बताने के लिए आमतौर से निजी या वैयक्तिक प्रतिक्रियाओं का सहारा ज्यादा लेते हैं। मैं कहना चाहता हूं कि कवियों की निजी प्रतिक्रिया के अलावा यथार्थ का भी तकाजा होता है, जिसकी अभिव्यक्ति हिन्दी की ताजा कविता में बहुत कम दिखायी पड़ती है। मैं यह बात इस समझ के साथ कह रहा हूं कि यथार्थ का अस्तित्व कवि या किसी भी व्यक्ति की चेतना पर निर्भर नहीं करता, लेकिन कवि की चेतना तो यथार्थ पर आधारित होती ही है। इसीलिए यह देखने की जरूरत पड़ती है कि कोई कवि यथार्थ को कैसे ग्रहण करता है। आज के अधिकतर कवि यह समझते हैं कि वे शब्दों में अर्थ भर कर कविता रचते हैं। बेशक कविता कवियों की अपनी रचना होती है, वे कविता के स्रष्टा होते हैं, लेकिन उनके ध्यान में यह प्रश्न कम आता है कि शब्दों में अर्थ आता कहां से है? हिन्दी कविता में ऐसा कुछ तो छायावादी काव्य में हुआ था और कुछ प्रयोगवादी काव्य में। और ऐतिहासिक रूप से यह देखने की बात है कि यथार्थ के सामाजिक पक्ष ने उपर्युक्त दोनों ही प्रवृत्तियों को अल्पजीवी सिद्ध कर दिया। कविता की जिन्दगी यथार्थ के व्यापक स्वरूप या सामाजिक पक्ष को स्वीकार करके ही लम्बी होती रही है। यह काव्य की ऐतिहासिक सच्चाई है। इसी प्रसंग में एक बात और कहना चाहता हूं कि यथार्थ के प्रति वैयक्तिक प्रतिक्रिया अथवा सामाजिक पक्ष की उपेक्षा के कारण कविता में जो यथार्थ आ रहा है, उसमें अमूर्तन ज्यादा है। ऐसे में काव्य सृजन में भाषा प्रधान बन जाती है।

अभी हमारे सामने आज के एक युवा कवि हरे प्रकाश उपाध्याय का सद्यः प्रकाशित कविता संग्रह 'खिलाड़ी दोस्त तथा अन्य कविताएं' है। हरे प्रकाश की कविताएं मैं पहले से पढ़ता रहा हूं। उनकी कविताएं मेरा ध्यान खींचती रही हैं। हरे प्रकाश के इस संग्रह की कविताओं पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने के प्रसंग में मैंने उपर्युक्त बातें कहीं इसका यह मतलब नहीं है कि वे बातें हरे प्रकाश की कविताओं से निकलती हैं। मेरा कहना यह है कि जहां आज की हिन्दी कविता में वैयक्तिकता, अमूर्तन और एक तरह का अभिव्यंजनावाद अथवा खास तरह की वैचारिकता की प्रधानता बढ़ती जा रही है, वहीं हरे प्रकाश कुछ अलग ढंग की कविता लिखने की कोशिश कर रहे हैं। यों अमूर्तन और वैचारिकता का प्रभाव इनकी कविताओं पर भी है। भाषा का खेल भी उनमें जहां तहां है। मैं यथास्थान

www.tadbhav.com

इन बातों का जिक्र करूंगा। लेकिन मुख्य बात यह है कि हरे प्रकाश सबसे पहले अपने समय को पहचानने की कोशिश करते हैं। इस प्रक्रिया में यह भी हम देखते हैं कि इस कवि के अनुभव का स्वरूप क्या है? कवि के लिए समय का वर्तमान मुख्य है, लेकिन वह समय को खंडित नहीं समझता। समय अनवरत है, निर्बाध है। इसके बावजूद हमारे अनुभव में जो समय आता है, वह वर्तमान ही है। यह वर्तमान इतना प्रमुख है कि वह अतीत को चुनौती देता है, अतीत के दाय को कबूल करते हुए भी उसके प्रभाव को चुनौती देता है, ताकि भविष्य के निर्माण की ओर बढ़ सके। इसीलिए वह कह सकता है – *यह जो वर्तमान है*

ताजमहल की ऐतिहासिकता को चुनौती देता हुआ आगे वह वर्तमान की भयानकता का चित्रण करता है और इस अमानुषिकता के प्रति वितृष्णा पैदा करते हुए कहता है –*इसी परिदृश्य में/मैं कविता लिख रहा हूं।*

'इसी परिदृश्य में' का मतलब यह है कि जिसमें *'सांप फन काढ़े हुए'* है और *'नेवले मरे पड़े हैं'* । असंगतियों के और भी दृष्टांत कवि ने दिये हैं। ऐसे परिदृश्य में कहीं भी रचनात्मकता दिखायी नहीं पड़ती, आदमी सड़ांध में पड़ा है, तब भी कवि है जो कविता लिख रहा है। जाहिर है कि वह रचनाशीलता को प्रेरित कर रहा है। भाषा का उपयोग कर रहा है और संकेत से मनुष्य को कह रहा है कि इस परिदृश्य से बाहर निकलो या इसे बदलो। कवि की यह रचनात्मक और प्रेरणात्मक भूमिका और भी कई कविताओं में दिखायी पड़ती है। वह 'पूछो तो' कविता में स्वयं पूछता है – *कब तक मौन रहोगे/विवादी समय में पूछना बहुत जरूरी है/पूछो तो अब/यह पूछो कि पानी में/अब कितना पानी है/आग में कितनी आग है/आकाश भी अब कितना आकाश है।*

इन पंक्तियों में प्रत्यक्षतः यह लगता है कि कवि प्राकृतिक परिवर्तन के बारे में कह रहा है। प्रकृति की भी प्रकृति बदल रही है, लेकिन व्यंजना यह है कि मनुष्य के हस्तक्षेप से, बल्कि मानव जीवन की व्यवस्था और उस व्यवस्था के अलम्बरदारों के हस्तक्षेप से, उनके प्रभाव से मनुष्य में पानी, आग और आकाश अर्थात् फैलने की जगह कम होती जा रही है। कवि वास्तव में मनुष्य जीवन के अधिकारों के लिए चिन्तित है।

कवि घर को पूरे परिवेश का प्रतीक बना कर परिवेश की विद्रूपताओं और भयानकता का चित्रण करता है। यों कवि निराश नहीं है। वह परिवेश के द्वंद्व को देखता, समझता है, इसलिए सामने उपस्थित बाधाओं के साथ ही सम्भावनाओं को भी देखता है। परिवेश को विस्तार और व्यापकता में देखें तो स्पष्ट होता है कि मनुष्य के स्वत्व का, जीने के साधनों का अपहरण हो रहा है, अपहरण करने वाला भी मनुष्य ही है। इस तरह कवि सामाजिक अंतर्विरोध को व्यक्त करता है। यह अंतर्विरोध अनेक कविताओं का विषय है। 'राजा और हम कविता में कहा गया है – *अंधेरे में/भूख से, दर्द और दुख से बिलबिलाते/हम दवा और रोटी खोजते रहते हैं/राजा अपनी मूंछ खोजता रहता है।*

जनतंत्र के युग में भी शासक वर्ग का राजनीतिक नेतृत्व अपनी झूठी प्रतिष्ठा और ताकत की चिन्ता में परेशान रहता है। अपने को राजा की तरह ही पेश करता है। दूसरी तरफ जनता भूख के इलाज के लिए रोटी और बीमारी के लिए दवा खोजती है। शासक नेतृत्व को जनता के जीवन की चिन्ता नहीं है। आज के अधिकतर कवि मनुष्य जीवन की इस तरह की समस्याओं के बारे में बहुत कम संवेदनशील दिखायी पड़ते हैं। इसीलिए मैंने हरे प्रकाश के उस पक्ष की चर्चा की है।

आज हिन्दी क्षेत्र में, हिन्दी के लेखकों के बीच जिन विषयों पर बहस या 'विमर्श' जारी है, उनमें एक है स्त्री। स्वभावतः हरे प्रकाश का कवि भी स्त्री की व्यथा को कई तरह से देखता है। एक कविता है – 'बच्चियां : कुछ दृश्य', जो दस टुकड़ों में है। बच्चियों के माध्यम से स्त्री जीवन की विभिन्न अवस्थाओं का चित्रण करते हुए कवि ने स्त्री का दर्द व्यक्त किया है। स्त्रियां बचपन में घरौंदों के जरिये, गुड़ियों के जरिये अपने सपने व्यक्त करती हैं। ज्यों ज्यों उम्र बढ़ती है, ब्याह की

www.tadbhav.com

समस्या, फिर बच्चे, बच्चियों के पालन की समस्या, गृहस्थी संभालने और चलाने की समस्या सामने आती है। इस कविता की स्त्रियां सम्पन्न घरों की नहीं हैं, उनके पास स्त्री विमर्श के लिए समय नहीं है। ये गरीब घरों की स्त्रियां हैं, समस्याओं से जूझना और जूझते हुए नयी समस्याओं के फेर में पड़ जाना उनकी नियति है। कविता के दसवें टुकड़े में कवि कहता है — *बाजार से सटे/झोपड़पट्टियों की ये बच्चियां/बिकाऊ हैं भाई जी, भूखी और दुखी हैं तो क्या/कपड़े साबुत नहीं हैं तो क्या/इनके पास/अपने जिन्दा शरीर तो हैं/ये शरीर सस्ते हैं भाई जी!*

इस कविता के विभिन्न टुकड़े बताते हैं कि हरे प्रकाश को यह समझ है कि जीवन की स्थिति का चित्रण करके ही जीवन का दर्द व्यक्त किया जा सकता है। यह वास्तव में कविता, अंतर्वस्तु और यथार्थ के आपसी सम्बंधों तथा भाषा में उन सम्बंधों को स्वरूप देने की समस्या है। इस कवि ने अपने अनुभव से इस समस्या को हल किया है। कवि का यह अपना अनुभव भी वास्तव में सामाजिक अनुभव है। स्त्री पीड़ा की अभिव्यक्ति 'औरतें' नाम की कविता में भी हुई। मुख्य बात यह है कि कवि औरतों की सहानुभूति में कोई बयान या वक्तव्य नहीं लिखता और उनकी पीड़ा मात्र नहीं लिखता। पीड़ा के साथ आज के युग में उसकी संघर्षशीलता और नयी जनतांत्रिक भूमिका का भी चित्रण करता है। एक टुकड़ा यों है — *माथे पर पति/और बच्चों की जिन्दगी/आंखों में समुद्र/और छाती में अमृत ढोये चलती थीं/मगर खुद दिन में सौ बार मरती थीं।*

'आंखों में समुद्र' 'छाती में अमृत' बड़े सार्थक प्रयोग हैं। कविता के अंत में कहा गया है —

क्या से क्या हो रही हैं औरतें/आंखें निकल रही हैं गुस्साये मर्दों की

इस तरह कवि की नजर बदलते सामाजिक राजनीतिक परिदृश्य पर है, इसलिए उसकी चेतना में नये नये दृश्य और बिम्ब आते हैं, जिनसे कवि की रचनात्मकता का पता चलता है। लेकिन मुख्य बात है सामाजिक जागरण का स्त्रियों पर प्रभाव।

गांव के नये अनुभव के साथ आज की जनतांत्रिक चेतना के प्रभाव से कवि भूमंडलीकरण ा को निशाना बनाता है। कविता के प्रारम्भ में ही कवि कहता है — *जब आप दुनिया को गांव बता रहे हैं/मेरे गांव की दुनिया उजड़ रही है।* इस सरल अभिव्यक्ति में भी एक व्यंग्य है और उस व्यंग्य का आधार है आज की दुनिया का वर्गीय अंतर्विरोध। आज के पूंजीवाद के दौर में कुछ ऐसे प्रतापी हैं, जिनके लिए दुनिया छोटी होती जा रही है, जैसे कि वह गांव हो, लेकिन ऐसा गांव जब भारत जैसे देश के गांव में घुसता है तो आम आदमी का गांव उजड़ जा रहा है। इस प्रक्रिया को देखते हुए कवि प्रश्न उठा कर प्रसंग को और पैना बना देता है — *क्या सबका अपना अपना गांव होता है?*

असल में हरे प्रकाश इस लम्बी कविता में गांव के सामंती चरित्र के खत्म होने और नवउपनिवेशवादी शक्तियों के प्रभुत्व में आने की कथा कहते हैं। कथा की तरह ही कविता बढ़ती चली गयी है। इस प्रक्रिया में मेहनतकश मनुष्य की जिन्दगी ही उजड़ रही है।

कवि की काव्य चेतना का स्वरूप कई कविताओं से पता चलता है। उनमें एक है 'मुकदमा'। इस कविता में दो प्रकार की सामाजिक शक्तियां हैं, एक मानवीय और दूसरी अमानुषिक। अमानुषिक शक्ति का प्रभुत्व है, अतः जो उसकी अवज्ञा करता है, वह दंड का भागी होता है। कवि इसी स्थिति में कहता है — मेरे कवि मित्रो,*/क्या तुम्हें वारंट नहीं मिला है अभी तक/समय ने मुकदमा दायर कर दिया है हम सब पर/हम सब समय की अवमानना के दोषी हैं*

अभियोग यह है कि हम तनी हुई मुट्ठियों वाला पोस्टर दीवारों पर लाल रंग से बना रहे थे। जब दुनिया सो रही थी, तब हम जाग रहे थे और जगाने वाली कविताएं लिख रहे थे, हम प्रार्थना सभाओं में शामिल नहीं हुए, आदि आदि। कवि ने अपने समय के राजनीतिक संघर्ष को सामान्य जनतांत्रिक सुविधाओं के उपयोग के आधार पर व्यक्त किया है, इसी क्रम में यह व्यक्त हो जाता है

www.tadbhav.com

कि जिन शक्तियों का वर्चस्व अभी है, वे कितनी गैर जनतांत्रिक हैं?

हरे प्रकाश समाज और समय के चरित्र को समझने के साथ ही व्यक्ति के चरित्र को भी समझने की कोशिश करते हैं। 'खिलाड़ी दोस्त' में कविता में वह कहते हैं – *वे हाथ मिलाते हुए अक्सर/हमारी ताकत आंकते रहते हैं।*

एक दूसरे पर भरोसा नहीं रह गया है। सब कुछ जैसे छद्म होता जा रहा है। हाथ मिलाना तो दोस्त का काम है, लेकिन ताकत आंकना दुश्मन का काम है। एक व्यक्ति में दोस्ती और दुश्मनी की प्रवृत्तियां क्या बताती हैं। कवि इस छद्म को पहचानता है। ऐसा छद्म पालने वाला आदमी हमेशा जीतना चाहता है, इसलिए *खेल में पारंगत दोस्त/खेल में अनाड़ी दोस्त से ही/अक्सर खेलते हैं खेल।*

छद्म के साथ ही एक बात यह भी है कि जो बलशाली है, वह जीतने के लिए कमजोर से ही भिड़ता है। कवि विषमतामूलक समाज में मनुष्य के चरित्र को बेपर्दा तो करता है, लेकिन यह कविता बयान शैली में लिखी गयी है। अतः यह कविता शैली की दृष्टि से सपाट है। ऐसी शैली में और भी कई कविताएं हैं। ऊपर चर्चित 'मुकदमा' कविता भी प्रायः सपाट शैली में लिखी गयी है। हिन्दी में बयान शैली के एक श्रेष्ठ कवि तो दिनकर हैं, जो विचारों से कवित्व पैदा करने की कोशिश करते हैं। दिनकर के बाद इस शैली का उपयोग रघुवीर सहाय ने किया है, हालांकि वे सपाट शैली में भी व्यंग्य पैदा करने की कोशिश करते हैं। धूमिल और आलोकधन्वा ने भी बयान शैली का उपयोग अपने अपने ढंग से किया है। आज के कवियों को इस पर ध्यान देना चाहिए और यदि कविता और बयान में फर्क किया जा सके तो कविता बेहतर हो सकती है। कई 'नक्सलवादी' कवियों ने बयान में कविता लिखी है, उनमें सबसे प्रमुख हैं गोरख पांडेय। हरे प्रकाश बयानवादी कवि नहीं हैं, लेकिन कई जगह उस शैली का प्रभाव इन पर है। शब्दों से खेलते हुए कविता करने की प्रवृति भी हरे प्रकाश ने दिखायी है, हालांकि बहुत कम। एक कविता है 'नाराज', जिसमें ऐसा खेल दिखता है। नाराज, ना - राज, नाना राज, काना राज आदि की योजना से यह कविता बनती है। 'बात' शीर्षक कविता में भी यह प्रवृत्ति दिखायी पड़ती है। लेकिन यह हरे प्रकाश की कोई मजबूत प्रवृत्ति नहीं है। वह आज के सामाजिक यथार्थ में निहित विडम्बनाओं, असंगतियों, अंतर्विरोधों को व्यक्त करने वाले कवि हैं। इसीलिए उसकी कविताओं में आकर्षण है, निजत्व है, उदात्तता है। हरे प्रकाश की ये कविताएं बताती हैं कि वह सम्भावनाओं से भरे हुए कवि हैं।

खिलाड़ी दोस्त तथा अन्य कविताएं : हरे प्रकाश उपाध्याय, प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, मूल्य : 120.00 रु.

www.tadbhav.com